भगत नामदेव – सबद ३४

धनि धंनि ओ राम बेनु बाजै ॥

रागु माली गउड़ा, भगत नामदेव, गुरु ग्रंथ साहिब, ९८८

धनि धंनि ओ राम बेनु बाजै ॥
मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै ॥१॥ रहाउ ॥
धनि धनि मेघा रोमावली ॥
धनि धनि कृसन ओढै काँबली ॥१॥
धनि धनि तू माता देवकी ॥
जिह गृह रमईआ कवलापती ॥२॥
धनि धनि बन खंड बिंद्राबना ॥
जह खेलै स्री नाराइना ॥३॥
बेनु बजावै गोधनु चरै ॥
नामे का सुआमी आनद करै ॥४॥१॥

सार: वास्तव में भाग्यशाली वह नहीं हैं जिन्हें जीवन में भौतिक सुख-सुविधाएँ मिली हैं बल्कि वह हैं जिन्होंने अपने भीतर और पूरी सृष्टि में मौजूद पवित्रता को पहचाना है। वह सचमुच सौभाग्यशाली हैं जो अहं और अलगाव के भ्रम से ऊपर उठकर, दुनिया की उलझनों के बीच भी मन की पवित्रता बनाए रखते हैं और इस सत्य को समझते हैं कि एक ही चेतना पूरे अस्तित्व में व्याप्त है। वह डर, मोह या किसी कठोर पहचान में बंधे नहीं रहते, न ही वह पहचान, अधिकार या श्रेष्ठता की भावना से प्रेरित होते हैं। उनकी असली ख़ुशी इस बात में है कि वह कैसे इंसान बन गए हैं, भीतर से आज़ाद, दूसरों के प्रति दयालु और जीवन के सामंजस्य के साथ एकरूप। अपने भीतर पूर्णता का अनुभव करने के बाद, वह विनम्रता और शालीनता के साथ दुनिया में आगे बढ़ते हैं और अपने आस-पास के लोगों के लिए शांति और उन्नति का स्रोत बनते हैं।

धनि धंनि ओ राम बेनु बाजै ॥
वह बांसुरी धन्य और अद्भुत है जो सर्वव्यापक एकत्व की वास्तविकता का संगीत बजाती है। यह उस आंतरिक जागृति की ओर इशारा करती है जो अनेकता में एकता का अनुभव करती है।

मधुर मधुर धुनि अनहत गाजै ॥१॥ रहाउ ॥
अनाहत नाद की मधुर और सुरीली ध्वनि निरंतर गूँजती रहती है। यह संकेत करती है कि 'अनाहद' वह सहज आंतरिक सामंजस्य है जो मन की स्पष्टता और शांति में विश्राम करने पर स्वयं प्रकट होता है। (१)(विराम)

धनि धनि मेघा रोमावली ॥
घने और सुंदर बालों वाली भेड़ धन्य और अद्भुत हैं। यह सृष्टि के प्रति प्रशंसा को दर्शाता है जो जीवन के अन्य रूपों का पोषण करती है।

धनि धनि कृसन ओढै काँबली ॥१॥
कंबल ओढ़े हुए कृष्ण धन्य और प्रशंसनीय हैं। यह दिखाता है कि कैसे ब्रह्मांडीय ऊर्जा भौतिक रूप में प्रकट होती है और सभी तत्त्वों को समाहित करती है। (१)

धनि धनि तू माता देवकी ॥
हे माता देवकी, आप धन्य और प्रशंसनीय हैं। यह उस जागरूकता के गर्भ को दर्शाता है जो आत्म-साक्षात्कार को जन्म देकर, गहन विकास का पोषण करता है।

जिह गृह रमईआ कवलापती ॥२॥
जिस घर में, सर्वव्यापी चेतना की उपस्थिति बनी रहती है। यह उस भावना को दर्शाता है जो ब्रह्मांडीय आत्मा को समाहित करती है और एकत्व बनाए रखती है। (२)

धनि धनि बन खंड बिंद्राबना ॥

वृंदावन के वन और खेत धन्य और मनमोहक हैं। यह भौतिक रूप को ऐसी पारिस्थिति के तंत्र के रूप में दर्शाता है जहाँ दिव्यता सहज रूप से फलती-फूलती है।

जह खेलै स्री नाराइना ॥३॥

जिस स्थान पर सर्वोच्च ऊर्जा का संचार होता है। यह दर्शाता है कि ब्रह्मांडीय स्रोत का अनुभव जीवन के स्वाभाविक, निष्कपट और सहज प्रवाह में होता है। (३)

बेनु बजावै गोधनु चरै ॥

वह बांसुरी बजाता है और गायों को चराता है। यह सामंजस्यपूर्ण स्थिति को दर्शाता है जिसमें ज्ञान इंद्रियों और विचारों का मार्गदर्शन करता है।

नामे का सुआमी आनद करै ॥४॥१॥

नामदेव कहते हैं कि उनका आंतरिक स्वामी आनंद का सृजन करता है। यह पुष्टि करता है कि सच्चे स्वरूप का बोध आत्मनिर्भर आनंद का स्रोत बन जाता है। (४)(१)

तत्त्व: भक्त नामदेव हमारे भीतर विद्यमान सामंजस्य की अत्यंत प्रेरक झलक प्रस्तुत करते हैं। वह हमें यह समझने के लिए प्रेरित करते हैं कि हमारा शरीर और मन ही वृंदावन हैं, ऐसे आध्यात्मिक अनुभव का आंतरिक संसार जहाँ एकता का संगीत निरंतर गूंजता रहता है। यह बोध हमें दर्शाता है कि दिव्यता कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसे हमें बाहरी दुनिया में खोजना पड़े बल्कि वह ऐसी शक्ति है जो हमारे दैनिक जीवन में हर पल मौजूद रहती है और दुनिया के साथ हमारे व्यवहार के दौरान हमारी इंद्रियों का मार्गदर्शन करती है। अपना ध्यान भीतर की ओर मोड़कर हम परमानंद की अवस्था को पा सकते हैं और उस शांति व आनंद का अनुभव कर सकते हैं जो हमारे भीतर ही निहित है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com